CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

झालावाड़ जिले की ग्रामीण महिलाओं पर शिक्षा और वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन

रविन्द्र कुमार रेगर
शोधार्थी
डॉ. इनाम इलाही
पर्यवेक्षक
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
Email: ravindraregar21@gmail.com, Mobile-9799760737

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 19.05.2024, Final proof received: 18.06.2024, Accepted: 27.06.2024

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में झालावाड़ जिले की ग्रामीण महिलाओं पर शिक्षा और वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन पर शोध कार्य किया है। एक नारी को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार को शिक्षित करना है। वर्तमान युग को वैचारिकता का युग कहा जा सकता है। अगर स्त्रिया माता अथवा गृहिणी के संस्कार, शिक्षा–दीक्षा आदि उत्तम नहीं होगी तो यह समाज और राष्ट्र को श्रेष्ठ सदस्य कैसे दे सकती है? समाज के लिए स्त्री का स्वस्थ, खुशहाल, शिक्षित, समझदार, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान होना जरूरी है और यह सब शिक्षा से ही सम्भव हो सकता है। जब स्त्री की स्वयं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि दृष्टिकोणों से उन्नत होगी तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे पायेंगी क्योंकि एकता स्त्रियाँ स्वयं राष्ट्र की आधी से कम जनसंख्या है तथा दूसरा बच्चे, युवा प्रौढ़ और वृद्धजन उन पर अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए निर्भर रहते हैं। महिलाओं की बढ़ती शिक्षा और वैश्वीकरण का प्रभाव का अध्ययन करने पर पता चलता है महिलायें जितनी आंकड़ो में शिक्षित हुई है दूसरी तरफ समाज उनके विकास में मानसिक रूप से समायोजन के लिए तैयार नही दिख रहा है। वही दूसरी और महिलाओं में शिक्षित होने के पश्चात् शिक्षा के उपयोग का संकट दिखायी देता है। महिलाओं के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है जो महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में सकारात्मक योगदान देती है।

मुख्य शब्द : *ग्रामीण महिलायें, शिक्षा और वैश्वीकरण आदि.*

प्रस्तावना

ग्रामीण विकास में महिलाओं का योगदान अमूल्य है महिलाएँ किसी भी समाज और परिवार की आधारशिला होती है जिन पर समाज की उन्नति की पूरी जिम्मेदारी होती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि ''जब तक भारत की महिलाएँ सार्वजनिक जीवन में हिस्सा नहीं लेंगी, देश उन्नति नहीं कर सकता।'' राष्ट्रपिता का कथन बिल्कुल सत्य है। देश की आधी आबादी यदि अशिक्षा, गरीबी, शोषण और निष्क्रियता में जब तक रहेगी कोई भी देश उन्नति नहीं कर सकता है।

शिक्षा ऐसा हथियार है, जो हर स्त्री को समाज में जीवन जीने का ढंग सिखाता है, जो समाज पहले औरतों का अपने सामने बैठने भी नहीं दिया करता था, आज वहीं समाज स्त्री को पहले अपनी बात रखने का हक देता है। महिलायें इस कदर जागरूक हुई हैं, कि उन्हें यह पता है कि वह अपने बच्चों का भी भविष्य किस तरह बेहतर कर सकती है। समय कितना ही पीछे क्यों न हो, या कितने ही आगे क्यों न निकल जायें, जब तक स्त्री अपने प्रति जागरूक नहीं हो पाती तब तक वह किसी का भी भला नहीं कर सकती। कोई भी महिला समाज का भी भला तभी कर सकती है, जब उसमें आत्मज्ञान या आत्मविश्वास जागता है। रूढ़िवादी सोच को पीछे छोड़ जब वह जीवन जीने का तरीका सीख लेती है, तो कोई भला कौन उसे पीछे कर सकता है। आज महिला अकेली ही नहीं है, जो अपना भला कर रही है, या सोच रही है, उसके पीछे समाज के कई लोगों का योगदान भी है, उसे आगे बढ़ाने में। समाज के सहयोग व योगदान से ही आज यह सब सम्भव हुआ है। आज के दौर में मायका पक्ष तो बेटी के साथ रहता ही है, परन्तु ससुराल पक्ष वाले भी अपनी बहुओं का साथ देते हैं, उनकी शिक्षा में, उनकी तरक्की के दौर में, उनके हर फैसले में, उनका साथ हमेशा रहता है। यदि किसी लड़की की पढ़ाई पूरी होने से पूर्व ही शादी हो जाती है, तो उसके ससुराल वाले उसकी पढ़ाई पूर्ण करवाने में उसका सहयोग देते हैं पर यह बात भी तभी लागू होती है, जब स्वयं वह लड़की पढ़ने की इच्छा जाहिर करें। यह भी लड़कियों के आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता के प्रति जागरूकता को दर्शाता है।

भारतीय समाज परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। वैश्विक बदलाव देश में दिखाई पड़ने लगे है। स्वतन्त्रता के पश्चात् से ही पश्चिमीकरण की प्रक्रिया और तेज हो गयी है और परिवर्तन हो रहे है। नयी प्रौद्योगिकी और नये आविष्कारों ने परिवर्तन को और बढ़ाया है। भारत में बढ़ता हुआ औद्योगीकरण लोगों के जीवनशैली में परिवर्तन लाया है और भारत की सामाजिक व्यवस्था भी कुछ हद तक परिवर्तित हुई है। भारत में होने वाले आधुनिक परिवर्तन ने स्त्री जगत को भी प्रभावित किया है। समाज में महिलाओं की भूमिका अब बदलने लगी है। अतः भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं पर शिक्षा और वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन आज के परिवेश में एक अध्ययन की आवश्यकता हो गयी है।

शोध के उद्देश्य

- झालावाड़ जिले ग्रामीण महिलाओं पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन
- झालावाड़ जिले ग्रामीण महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन

संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

डॉ0 श्यामाचरण दूबे (2014) ने महिलाओं के सामाजिक स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि ''महिलाओं की परम्परागत विचार धाराएँ बदल रही है। अब लोग अनुभव कर रहे हैं कि उनके सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होना चाहिए। शिक्षा के अवसर बढती हुई औद्योगिक व्यावसायिक गतिशीलता, उभरती हुयी सामाजिक व्यवस्था महिलाओं की स्थिति में क्रमिक परिवर्तन ला रही है।

पी बारबल (2014) ने अपनी कृति सोशल स्टडी फिकेशन में लिखा है कि व्यावसायिक भूमिकाएँ प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से समाज में अधिक महत्वपूर्ण होती है और व्यक्ति के सामाजिक मूल्यांकन का आधार होता है। महिलाओं के लिए

व्यवसाय का बड़ा होना और समाज के मुख्य धाराओं में उनकी मुख्य भूमिका होना ही उनके सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध–पत्र के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इसमें द्वितीयक आकडों का उपयोग किया गया हैं।

संमकों का संग्रहण

शोधपत्रों, पत्र–पत्रिकाओं एवम् प्रकाशनों के आधार पर किया गया हैं।

शिक्षा

यह सार्वभौम स्वीकार्य तथ्य है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा और विकास के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। महिलाओं को शिक्षा और अधिकार दिये बिना कोई समाज खुशहाल नहीं हो सकता। व्यक्ति, परिवार, समुदाय और राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास में महिलाओं की शिक्षा एवं साक्षरता का महतव सभी जगह स्वीकार किया गया है। पिछले एक दशक में एक बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि महिलाओं के लिए समानता हासिल करने के लिये जारी संघर्ष के केन्द्र में महिलाओं की शिक्षा को मान्यता प्रदान की गयी। सन् 2000 तक सबको साक्षर बनाने अर्थात सार्वभौमिक साक्षरता का लक्ष्य हासिल करने का नारा दिया गया है। आजादी के बाद भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में जो तरक्की की है, वह अभूतपूर्व है। भारत के इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपनायी है। उसमें इन वर्गो खासकर महिलाओं को समान अवसर देने पर बल दिया गया है, जिन्हें अभी तक समानता नहीं मिल पायी थी।

शिक्षा सम्बन्धी कार्य योजना (1992) में महिलाओं को समानता भागीदारी, और आधिकार देने का सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी और इसमें शिक्षा के विभिन्न स्वरों से सम्बद्ध लगभग सभी क्षेत्रों और पहलुओं को शामिल किया गया। शिक्षा से कोई भी महिला अधिक जागरूक, अधिक श्रेष्ठ और अधिक आत्म विश्वासी बन सकती है, इससे परिवार और समुदाय में उसका महतव बढ़ जाता है।

1981 से 1991 के दशक में पुरूष साक्षरता की बजाए महिला साक्षरता की दर अधिक तेजी से बढी है। 60 प्रतिशत से अधिक महिलाएं अभी निरक्षर है। महिला साक्षरता में ग्रामीण–शहरी का अनराल बढ़ा ा है। अगर साक्षरता के आंकडों पर नजर डालें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 80 प्रतिशत महिलाएं निरक्षर हैं और केवल 2 प्रतिशत ऐसी हैं जो मैट्रिक से अधिक पढ़ी हैं। ग्रामीण लड़कियां देर से स्कूल शिक्षा प्रारम्भ करती हैं और बीच में ही छोड़ देती हैं यह बड़ी महतवपूर्ण बात है कि भारत के सर्वाधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और बिहार सर्वाधिक पिछड़े राज्यों के वर्ग में आते हैं।

वर्तमान में झालावाड़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षा का भी एक अच्छा प्रतिशत सामने आया है। परिवार के सदस्यों का सामाजिक स्तर उन्नत करने में स्त्री शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है, अनुसंधान अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाएँ चाहे वह शहरी हो अथवा ग्रामीण उनकी शिक्षा का समूचे परिवार के सामाजिक स्तर के सुधार पर रचनात्मक असर पड़ता है। ग्रामीण महिलाओं के विषय में यू तो कई सर्वे रिसर्च किये गये हैं, परन्तु शिक्षा झालावाड़ जिले की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक आर्थिक जीवन के विभिन्न आयामों पर किस प्रकार प्रभाव डालती है, प्रस्तुत लेख में इसका अध्ययन किया गया है।

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के विस्तार से समाज में संस्थागत एवं संरचनात्मक विकास को बढ़ावा मिला है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत न सिर्फ द्रुत गति से औद्योगिक एवं आर्थिक विकास की बात की जाती हैं, बल्कि समस्त समाज के कायाकल्प की बात भी इसमें शामिल है। यह महसूस किया गया है कि वैश्वीकरण के ढ़ाँचे के अंतर्गत समाज के उस वर्ग को अधिक फायदा हुआ है, जो अधिक योग्य, शिक्षित तथा सक्षम था। इससे समाज के वंचित, शोषित एवं हाशिये पर रहे लोगों को फायदा नहीं हुआ, किंतु नुकसान अवश्य हुआ है। वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की मुश्किलें बढ़ी है। बढ़ते मशीनीकरण से नौकरियों में असुरक्षा, कम वेतन, परंपरागत हुनर की अनदेखी, विदेशी कंपनियों की मनमानी शर्तें और उनके समक्ष कानून की असमर्थता...आदि परिस्थितियाँ औरतों को न्याय दिलाने में असफल रही हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अंतर्गत महिलाओं का वस्तुकरण हो गया है। बड़ी कंपनियाँ अपनी सेवाओं तथा वस्तुओं को बेचने के लिये महिलाओं की योग्यता, क्षमता तथा व्यक्तित्व का प्रयोग करती हैं। वैश्वीकरण के इस युग में महिलाओं के वस्तुकरण एवं व्यावसायीकरण को भारतीय समाज पर पड़े इसके नकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के कारण विकसित देशों में महिलाएँ निर्धनता एवं भेदभाव का शिकार हो रही हैं। एक ही तरह के काम में पुरुष तथा महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है। आज महिलाओं के श्रम को उत्पादन से सीधे नहीं जोड़ा जाता इसी कारण पुरूष विशिष्टि हो गए और महिलाएँ महत्त्वहीन रह गई। महिलाएँ ज्यादातर असंगठित संस्थाओं में काम करती हैं और नियमहीनता के चलते वे शोषण का शिकार हो जाती हैं। आज भी महिला श्रमिकों को कम मज़दूरी के साथ वांछित अधिकारों से वंचित होना पड़ता है। उपभोक्तावाद, हिंसा तथा स्वच्छंद यौन व्यवहार आदि का समाज व महिलाओं पर घातक प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण जहाँ विकासशील देशों के विकास को सुनिश्चित करता है, वहीं यह समाज की आर्थिक रूप से गरीब महिलाओं को अधिक उत्पीड़ित करने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा हथियार है। इसके माध्यम से ही महिलाओं का आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण सम्भव है, महिला आबदी का एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। परिवार एवं समाज की प्रगति का एक बहुत बड़ा आधार महिलाएं ही है। मलिाओं के शिक्षित होने पर ही एक प्रगतिशील समाज का, देश का निर्माण संभव है। ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा के विषय में पूर्व में भी कई अध्ययन कार्य हुए हैं, ग्रामीण महिलाओं में विशेषकर युवतियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की लगन स्पष्टतः दिखायी देती है, परंतु फिर भी समय–समय पर देखने को मिलता है कि भले ही ग्रामीण महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हो, लेकिन समाज के नियमों का दबाव निरन्तर इन पर बना रहता है, तथा उच्च शिक्षा हासिल कर लेने के बाद भी उन पर समाज के नियमों का परमपरागत रूप से पालन करना अनिवार्य समझा जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डा0 अम्बेडकर, बी0आर0 (1936) – एनहिलेशन ऑफ कास्ट, नई दिल्ली।
- आहूजा राम (2005) – भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सिंह जे.पी. (2011) – समाजशास्त्र – अवधारणाएं एवं सिद्धान्त, पी0एच0एल0. लर्निंग प्रा0लि0, नई दिल्ली।
- वर्मा सवालिया बिहारी (2011) – ग्रामीण महिलाओं की स्थिति, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- देसाई नीरा (1997) वूमेन इन मॉडन इण्डियन, वोरा एण्ड कम्पनी, बाम्बे।
- एम.कृष्ण राज (1987) वूमेन एण्ड सोसायटी एन इण्डिया, अजन्ता बुक इंटरनेशनल दिल्ली।
- देवी राम इन्दिरा वूमेन एजूकेशन इम्पलाइमेंट : फैमिली लिविंग, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।